1

एक प्राचीन पत्र से आधुनिक संदेश (1:1)

क्या आपने यह देखने के लिए कभी उन पाठ्य-पुस्तकों की समीक्षा की है, जिन्हें आप अपनी माध्यमिक शिक्षा में इस्तेमाल करते थे? यदि हां तो आपको वे काफ़ी पुरानी लगी हों, है न? समय बीतने से भौतिक विज्ञान के नये नियम बन गए हैं और रासायनिक चार्ट के नये तत्व जुड़ गए हैं। ''नया'' गणित भी अब काफ़ी पुराना हो चुका है। कुछ पुरानी पाठ्य-पुस्तकों का इस्तेमाल तो हमारे अतीत की पुरानी यादों का ही इस्तेमाल करता है।

स्पष्टतया जब आप पिछली पीढ़ियों के परिवर्तन तथा विकास पर विचार करते हैं और 1900 से अधिक वर्ष पहले के यीशु के विश्वासियों के नाम लिखे पत्र का अध्ययन आरम्भ करते हैं, तो कई प्रश्न सामने आते हैं। क्या यह पत्र समय बीतने के साथ पुराना हो गया है? क्या इस पत्र को केवल ऐतिहासिक उद्देश्यों के लिए पढ़ा और अध्ययन किया जाना चाहिए? क्या ऐसा पत्र इक्कीसवीं शताब्दी के लोगों के लिए प्रासंगिक हो सकता है?

बिना किसी संदेह के हम पाएंगे कि याकूब द्वारा लिखा यह पत्र हमारे समय के लिए प्रासंगिक है। बेशक यह पुराना हो सकता है, परन्तु आज के किसी भी विश्वासी के लिए प्रासंगिक है।

बाइबल की अन्य सभी पुस्तकों की तरह ही याकूब की पुस्तक का सम्बन्ध भी दो अलग-अलग समय के क्षेत्रों से है। समय का पहला क्षेत्र वह तिथि है, जिसमें यह दस्तावेज़ लिखा गया था। मूलत: याकूब का पत्र ईश्वरीय प्रेरणा प्राप्त लेखक द्वारा विश्वासियों को सिखाने के लिए लिखा गया था कि उनके विश्वास से उनके जीवनों में अन्तर आना चाहिए। विश्वासियों ने इस पत्र को पढ़ा और इसका अध्ययन किया तो पाया कि उनके दैनिक जीवन में विश्वास आवश्यक है। समय का दूसरा क्षेत्र वर्तमान घड़ी है। पत्र की मूल जीवन परिस्थिति को जानकर, अर्थात पत्र के *''तब''* को समझकर विश्वासी को आज के मसीही जीवन जीने के *''अब''* के विचार तक आने में सहायता मिलती है। आज के संसार में परीक्षाओं, प्रलोभनों, वित्तीय उलझनों और सामाजिक सम्बन्धों का सामना करते हुए यह पत्र हमें अपने मसीही विश्वास को अलग बनाने में सहायक होगा।

इस पत्र का आरम्भ पहली शताब्दी के पत्र लेखन की विशेष शैली से होता है, जिसमें लेखक का परिचय, उसके पाठकों का उल्लेख और अभिवादन मिलता है। ''परमेश्वर के और प्रभु यीशु मसीह के दास याकूब की ओर से उन बारहों गोत्रों को जो तितर-बितर होकर रहते हैं, नमस्कार पहुंचे'' (1:1)। यह समझने के हमारे प्रयास में कि विश्वास का यह प्राचीन पत्र हमारे जीवनों में कैसे अन्तर ला सकता है, पृष्ठभूमि पर विचार किया जाना आवश्यक है। ऐतिहासिक आरम्भ, शिक्षा सम्बन्धी उद्देश्य तथा व्यक्तिगत शैली पर विचार करें।[1]

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

बाइबल की पुस्तकें आकाश से सोने की थाली में नहीं गिराई गई थीं। इसलिए हम देखते हैं कि हर पुस्तक का अपना अलग आरम्भ या ऐतिहासिक मूल है। पवित्र आत्मा के द्वारा काम करते हुए परमेश्वर ने लेखकों को जीवन की अलग-अलग परिस्थितियों में लोगों से बात करने की प्रेरणा दी, जिसका परिणाम यह है कि बाइबल की पुस्तकें अपने आप में विलक्षण हैं। क्योंकि परमेश्वर का वचन विशेष मानवीय आवश्यकताओं को बताता है। अपने लिए *''अब''* परमेश्वर के संदेश को समझने के लिए हमें उस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखना आवश्यक है, जिसमें पुस्तक लिखी गई थी। लेखक तथा मूल पाठकों का अध्ययन हमें यह तय करने में सहायक हो सकता है कि लिखे जाने के समय याकूब के पत्र का क्या अर्थ था।

लेखक

कई बार यह तय करना भी कठिन काम होता है कि बाइबल की कोई पुस्तक किसने लिखी। बाइबल की कुछ पुस्तकों के लेखक, जैसे पौलुस की पत्रियां, पहचानना आसान है क्योंकि उनमें बताया गया है कि उन्हें लिखने वाला कौन है। अन्य पुस्तकों के लेखक का पता लगाना जटिल काम बन जाता है क्योंकि हम उसके लिखे जाने के समय से बहुत दूर हैं और लेखक के बारे में कई विचार पाए जाते हैं।

याकूब की पत्री लेखक का नाम तो बताती है, परन्तु उसकी वास्तविक पहचान नहीं बताती: ''परमेश्वर के और प्रभु यीशु मसीह के दास याकूब की ओर से ...'' दिक्कत यह है कि आज की तरह पहली सदी में भी ''याकूब'' एक सामान्य नाम था। वास्तव में नये नियम में चार लोगों के यही नाम मिलते हैं: जब्दी का पुत्र और यूहन्ना का भाई याकूब; हल्फई का पुत्र याकूब; शिष्य यहूदा का पिता याकूब और यीशु का भाई और बेहतर ढंग से कहें तो सौतेला भाई याकूब। बेशक पत्री के लेखक के बारे में चर्चा करने के लिए बहुत कागज़ और स्याही लग सकती है, परन्तु इतना कहना ही काफ़ी है कि प्रभु के सौतेले भाई याकूब को ही इसका मूल लेखक माना जाना *चाहिए*।

लेखक अपने आप को ''परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह का दास'' के रूप में दिखाता है। ''दास'' अनुवाद यूनानी शब्द *doulos* से किया गया है, जिसका अर्थ है वह व्यक्ति जो स्वामी का हो। याकूब ने अपने आपको परमेश्वर की सम्पत्ति माना और उसका मानना था कि जो कुछ परमेश्वर ने आज्ञा दी है, उसे पूरा करना उसका काम है। प्रभु के साथ अपने सम्बन्ध के बारे में जो वह कह सकता था उस पर विचार करें: ''यीशु का पसंदीदा भाई याकूब''; ''अठारह वर्षों तक प्रभु के साथ एक ही कमरे में सोने वाला याकूब''; या ''किसी भी जीवित व्यक्ति से यीशु का सबसे निकटतम, याकूब।'' फिर भी अपने पारिवारिक सम्बन्ध से दूसरों को प्रभावित करने का प्रयास करने के बजाय उसने अपने आपको केवल परमेश्वर और यीशु मसीह के दास के रूप में दिखाया।

श्रोता

आरम्भिक प्राप्तकर्ताओं को ''बारहों गोत्रों जो तितर-बितर होकर रहते हैं'' के रूप में दिखाया गया है। यह नाम जिसे भी दिया गया हो, पुस्तक से हमें पता चलता है कि वे मसीही

लोग थे (2:1; 5:7)। ये आरम्भिक मसीही लोग सम्भवतया आरम्भिक कलीसिया के सताव के कारण ''तितर बितर हो गए'' थे। यह भी सम्भव है कि ''बारहों गोत्रों'' वाक्यांश का याकूब का इस्तेमाल परमेश्वर के सब लोगों अर्थात आत्मिक इस्राएल के लिए था। याकूब के पत्र को ''सामान्य पत्री'' कहा गया है। इसका अर्थ यह है कि याकूब ने इसे मूलतया एक मण्डली को सम्बोधित नहीं किया, बल्कि उसकी मंशा पूरे जगत के विश्वासियों को अपने जीवनों में उस मसीही विश्वास से होने वाले अन्तर को दिखाने की थी।

डॉक्ट्रिन से जुड़े विषय

याकूब ने बैठकर एक ही दिन में मसीही लोगों को सामान्य पत्र लिखने का निर्णय नहीं लिया। इस पत्र का मूल पहली सदी के मसीही लोगों के जीवन की कुछ निर्णायक परिस्थितियों में मिलता है। जिस कारण हम कह सकते हैं कि इस पत्री में अस्तित्व के लिए कोई डॉक्ट्रिनल कारण है। एक मानवीय लेखक के द्वारा अपने लोगों से बात करने के लिए परमेश्वर के पास एक संदेश था।

याकूब बदलते समयों में लिख रहा था। उसके लिखने का समय कलीसिया के आरम्भिक दिनों से इतना दूर था कि निराशाजनक व्यवहार, अभ्यास और समस्याएं सामने आ गई थीं। कई:

- कठिन परीक्षाएं थीं
- पाप की अभिलाषाएं थीं
- धनवानों के साथ विभिन्न प्रकार की समस्याएं थीं
- विश्वास के अंगीकार के अनुसार कइयों को अपना जीवन बिताने में दिक्कत थी
- भाषा का इस्तेमाल तक कलीसिया में फूट का कारण बन गया था।
- मसीही लोग जो शारीरिक और आत्मिक रूप में अस्वस्थ थे

समस्याओं की सूची की समीक्षा करते हुए ऐसा लगता है कि हमारी आज की स्थानीय कलीसियाओं के सामने वही समस्याएं हैं। क्या हमारी कलीसियाओं के लोगों पर कष्ट आता है? क्या सदस्य आम तौर पर एक तरफ़ की बात करके उससे बिलकुल विपरीत जीवन बिताते हैं? क्या भौतिकवाद एक गम्भीर समस्या है? क्या मसीही लोग अपनी जीभ वश में रखने में नाकाम होते हैं?

यह पत्र किसी शून्यता में नहीं लिखा गया था। इसके बजाय इसमें हमारे अस्तित्व के हर क्षेत्र में हमारे मसीही विश्वास को काम करने देने की शिक्षाएं थीं। याकूब परमेश्वर के लोगों को यीशु में पहले वाले विश्वास को रखकर ही संतुष्ट होने देना चाहता था। वह उन्हें भरोसा रखकर आज्ञाकारिता, व्यक्तिगत समर्पण और दूसरे लोगों में समर्पण में बढ़ाना चाहता था। पूरे पत्र का स्पष्ट विषय ''फर्क दिखाने वाला विश्वास'' हो सकता है।

याकूब का पत्र पुराना नहीं पड़ा है। जब तक मसीहियत के सामने आर्थिक विविधता, राजनैतिक अस्थिरता, विभिन्न परीक्षाओं, बुराई करने के भीतरी प्रलोभन, स्वार्थ और नाम की परन्तु काम की मसीहियत नहीं जैसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा तब तक याकूब के संदेश की आवश्यकता रहेगी।

निजी शैली

''हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है'' (2 तीमुथियुस 3:16), तौभी बाइबल की हर पुस्तक की अपनी अलग शैली है। वचन की प्रेरणा देने में परमेश्वर ने मानवीय व्यक्तित्व को अनदेखा नहीं किया, बल्कि पूरी तरह से इसे अपने उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया। बाइबल के अन्य सभी लेखों की तरह इस पत्री का भी अपना अलग रूप और अलग बहाव है।

याकूब संसार भर के परमेश्वर के लोगों को सम्बोधित पहली सदी के पत्र के रूप में मिल जाता है। पहली सदी की कलीसियाओं में इकट्ठा होने पर आरम्भ से अन्त तक यह पत्र पढ़ा जाता था, इसे पढ़ने के लिए लगभग तीस मिनट लगते हैं। जब वे विश्वासी सुनते होंगे तो उन्हें स्पष्ट रूपकों, मंत्रमुग्ध करने वाली सूक्तियों, विशेष मुहावरों, खोजपूर्ण प्रश्नों और सजीव उदाहरणों को सुनते थे। वास्तव में याकूब ने 570 विभिन्न यूनानी शब्दों का इस्तेमाल किया, जिनमें से तिहत्तर नये नियम में और कहीं नहीं मिलते।

हम याकूब की पत्री की विलक्षणता, उसके लिखने की शैली की स्पष्टता से दिखाई देने को देखते हैं। वास्तव में पत्री पढ़ते हुए हम कह सकते हैं कि ''लेखक बनने से पहले यह व्यक्ति प्रचारक था।'' इसकी विलक्षण शैली ने आर. वी. जी. टास्कर को इतना प्रभावित किया कि उसने कहा, ''याकूब की पत्री प्रवचन नोट्स का एक संग्रह है।''[2] पूरी पुस्तक में उसने अपने पाठकों से ऐसे बात की जैसे प्रचारक अपने सुनने वालों से करता है (1:16, 19; 2:20)। बार-बार प्रचारक और मण्डली के बीच के महत्वपूर्ण सम्बन्ध की गरमाइश ''हे भाइयो,'' ''मेरे भाइयो,'' और ''मेरे प्रिय भाइयो'' में मन से सीधे निकले लिखे गए शब्दों में मिलती है (उदाहरण के लिए 1:2, 16, 19; 2:1, 5, 14; 5:7, 9, आदि)।

सारांश

याकूब का संदेश पहली *और* उसके बाद की हर सदी के मसीही लोगों के लिए है। याकूब मसीही लोगों को सिखा रहा है कि प्रतिदिन का हमारा जीवन ही हमारे विश्वास को अलग बनाता है।

टिप्पणी

[1]हैरल्ड टी. ब्रायसन, *हाऊ फ़ा थ वर्क्स,* ''स्टडी इन द लैटर ऑफ़ जेम्स'' (नैशविल्ले, टैनिसी: ब्राडमैन प्रेस, 1984) के अध्याय 1 से लिया गया।[2]आर. वी. जी. टास्कर, *दि जनरल एपिस्टल ऑफ़ ज।म्स,* टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ (ग्रैड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1980), 9.